जाइब देवी के दुअरिया

गीतकार :
जीतेन्द्र नाथ सिंह 'जीत'

देवी गीत

जाइब देवी के दुअरिया

सुश्री .... जी

को
सादर भेंट

गीतकार : जीतेन्द्र नाथ सिंह

जीतेन्द्र नाथ सिंह 'जीत' आकाशवाणी
वाराणसी

14.2.2002

प्रकाशक :

लीला प्रकाशन

ग्राम एवं पोस्ट पातेपुर जिला - गाजीपुर उ.प्र.

जाइब देवी के दुअरिया

•

गीतकार :

जीतेन्द्र नाथ सिंह "जीत"

•

अक्षर संयोजन एवं साज सज्जा :
कॉम्प सक्सेस,
43, शिवाजी नगर, महमूरगंज,
वाराणसी। ✆ : 223041

•

प्रकाशक :
लीला प्रकाशन
ग्रा० पो०— पातेपुर
जिला— गाजीपुर (उ०प्र०)

•

प्रकाशन वर्ष : प्रथम संस्करण 2001

•

मूल्य : रु. 21.00 (इक्कीस रुपये)

•

॥ जय माता दी ॥

जिनकी कोख में जन्म लिया
जिनके आँचल की छाँह में
पला पनपा और जिया
उन्ही पूजनीया माताजी
स्व० महराजी देवी
की
पावन स्मृतियों को
सादर समर्पित

आभार

अपने उन सुहृद जनो के स्नेह के प्रति कृतज्ञता किन शब्दों में व्यक्त करूँ जिनके पवित्र अनुराग की छाँह में शब्द सुमनों की यह माला गूँथता रहा। जिस संस्थान ने मुझे जीवन दिया जीविका दी और दिया ढेर सा प्यार भरा विश्वास, जहाँ से मेरी पहचान बनी, आकाशवाणी वाराणसी परिवार के अपने उन सभी बन्धुओं के आत्मीय सहयोग के लिए विशेष आभार के साथ बिनत।

जीतेन्द्र नाथ सिंह 'जीत'
आकाशवाणी, वाराणसी

अनुक्रमणिका

PADMASHREE,
PADMABHUSHAN, SANGEET
SHIROMANI, SANGEET
ACHARYA, THUMRI SAMRAGI,
UTTAR BHART KI KOKILA,
SANGEET NATAK ACADEMY
AWARD, BHOJPURI BHASKAR,
SANGEET SARASWATI ,
SANGEET BHARTI, YASH
BHARTI, D. LIT, USTAD HAFIZ
ALIKHAN AWARD, TANSEN
AWARD.

Varanasi :
H-19. Sanjay Gandhi Nagar,
Chowka Ghat
Varanasi-2 (India)
Tel, 210814

Date— 22.10.1997

श्री जीतेन्द्र नाथ सिंह 'जीत' जी का गीत-गुंजन, 'जीत बावनी' एवं 'जाइब देवी के दुअरिया' पुस्तकें मैंने पढ़ी। 'लोकगीत' में इनका यह कार्य सराहनीय है। 'भगवान विश्वनाथ' जी से प्रार्थना है कि इसी तरह अपने कार्य में उन्नति करते रहें एवं बच्चों को शिक्षा देते रहें।

मेरी शुभकामनाएँ इनके साथ हैं!

श्रीमती गिरिजा देवी जी

उद्‌गार

जन कवि तथा जनगायक श्री जीतेन्द्र नाथ सिंह "जीत" के अनेक वे गीत जिन्हें कवि ने मातृ वन्दना (देवीगीत) के रूप में लिखा है, उन्हीं के मुँह से सुना। वैसे तो हिन्दी भाषी जितनी भी लोकभाषाएँ है उनमें अनेक धुने हैं किन्तु भोजपुरी वह भाषा है जो अपनी एक ठसक, लोच तथा मिठास के साथ ही लोक धुनों का एक विशाल भंडार लिए हुए है। इतनी लोकधुनें अन्य भाषा में नहीं मिलतीं। प्रस्तुत संग्रह "जाइब देवी के दुअरिया" में कवि ने मात्र तीस गीतों के माध्यम से देवी गीत के चौदह धुनों को प्रस्तुत किया है जो भावों की सहजता तथा सरसता के साथ ही लोक तत्वों से पूर्ण परिपक्व हैं। उनको सुनने तथा पढ़ने के बाद किसी पाठक के मन में यह धारणा हो ही नहीं सकती की ये गीत पारंपरिक गीतों से जरा सा भी इधर उधर होंगे। पारंपरिक गीतों की मुख्य धारा में घुल मिल जाने वाले पारंपरिक गीतों को लिखने वाले बहुत कम मिलते हैं और इस कला में प्रियवर "जीत" जी पूर्ण सफल तथा समर्थ हैं। खींच तान कर प्रस्तुत करने वाले गीतकार एवं गीत-गायक तो बहुत मिल जायेंगे, लेकिन उनमें छन्द दोष होते हैं। "जीत" जी में यह अभाव है ही नहीं जो इस बात का साक्षी हैं कि ये जन्मजात कवि हैं। इतना ही नहीं मैं तो इन्हें धुनों के मामलों में आचार्य रचनाकार कहूँगा। इनका व्यक्तित्व बहुत ही सरल, सहज एवं पवित्र है। न कोई छल, न कोई छद्म, न यश की लालसा लिप्सा। भक्ति भाव से भरे हृदय से जो उद्गार निकले उन्हें "जीत" जी ने बड़ी सहजता के साथ अपने गीतों में पिरो दिया है।

आज अनेक लोक गायक उनके गीतों को गा—गाकर आनन्दित हो रहें हैं। बाजार में "जीत" जी के अनेक कैसेटों की धूम मची हुई है, किन्तु यह कवि अपनी जगह पर यथावत है, बिना किसी लालच के इस अर्थ युग में ऐसा उदार रचनाकार कहाँ मिलेगा। इन्होंने अपने को कभी भी व्यवसायिक रचनाकार नहीं समझा। मिला-मिला, न मिला न मिला। न तो मिलने में अधिक प्रसन्नता है और नहीं न मिलने में अधिक दुख। माता बागेश्वरी से मेरी प्रार्थना है कि कवि के ऊपर इसी प्रकार अपने आंचल की छाया बनाये रहें।

अस्सी वाराणसी — **चन्द्रशेखर मिश्र**
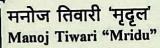
मनोज तिवारी 'मृदूल'
Manoj Tiwari "Mridu"
Singer
Audio Cassattes in T-Seriesc & Others

Ph : No. 340028
Resi Add, : C 29/61-A
Raghubir Maldhia
VARANASI – 221002

लोक गीतों के माधुर्य और उनके धुनों को माँ भगवती के गुणगान से जोड़ने के मनभावन प्रयास में अग्रसर भैया ''जीत'' का नवीनतम गीत–संग्रह ''जाइब देवी के दुअरिया'' देवी गीतों का अनुठा संग्रह आपके हाथ में है। माँ भगवती जगत जननी जगदम्बा के अनेक स्वरूपों का सहज एवं स्वाभाविक वर्णन जीतेन्द्र नाथ सिंह ''जीत'' की अपनी विशेषता है।

मैं तो बस इस इन्तजार में हूँ, जब ''जीत'' के भाव और गीत एक रूप होकर श्रोताओं को माँ के भक्तों को इस कदर दीवाना बना जायेंगे जब लोगों के ओठों से आठो पहर जीत जी के गीत गुनगुनाते निकलेंगे और तब हम भी गायेंगे.... जीत का गीतिया भक्तन के दिल में माई क उत्सव मनवले बा।

मनोज तिवारी 'मृदूल'
(गायक)

सुप्रसिद्ध नवगीतकार
महामंत्री
हिन्दी लेखक मंच

सी० ९/१८२, हबीबपुरा
चेतगंज, वाराणसी

आध्यात्मिक जगत और भारतीय संस्कृति में शक्ति की आराधना महत्वपूर्ण है। लोक जीवन में शक्ति को अराध्य देवी और माँ के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त है। नवरात्रि में विशेष रूप से माँ की पूजा अर्जना होती है। इसके अतिरिक्त शीतला माँ मैहर देवी, वैष्णो देवी, विन्ध्यवासिनी का विग्रह-पूजन जीवन में लोक गीतों के माध्यम से होता रहा है। लोकगीत वैसे भी लोक जीवन की सम्पूर्णता के मुखर स्वर हैं। इनकी भाषा, धुन, ताल, लय और कथ्य सब कुछ लोक जीवन को ही अभिव्यक्त करते हैं।

''जाइब देवी के दुअरिया'' इसी संदर्भ में रचा बसा शक्ति स्वरूपा माँ की आराधना में रचित लोक गीतों का संकलन है। इसके रचयिता लोक कवि श्री जीतेन्द्र नाथ सिंह ''जीत'' हैं। श्री जीत आकाशवाणी में सेवारत हैं। इनका जीवन लोक जीवन की गंध और विश्वास से आलोड़ित है। लोक भाषा में इन्होंने जीवन के विविध पक्षों को अपने गीतों में उकेरा है।

प्रस्तुत संग्रह उनकी रचनात्मक प्रतिभा का श्रेष्ठ नमूना हैं इस संग्रह के गीतों की विशेषता यह है कि यह भक्ति भावना से ओत प्रोत माँ के प्रति अगाध श्रद्धा के समान हैं माँ के गीत जितनी धुनों में सम्भव है उन सबका कुशलता पूर्वक हुआ है पूर्वांचल में बोली जाने वाली भोजपुरी के माध्यम से चौदह धुनों पर आधारित इस संग्रह के सभी गीत भक्ति भावना से उत्प्रेरक हैं।

''जाइब देवी के दुअरिया'' निश्चित रूप से शक्ति के उपासकों को सम्बल देगा। ऐसा मेरा विश्वास है।

श्रीकृष्ण तिवारी
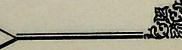
शुभकामना

भाई जीतेन्द्र सिंह ''जीत'' के नया संकलन ''जाइब देवी के दुअरिया'' निकलत बा। जीतेन्दर सिंह के बारे में जनता के का जनावे के बाकी बा—जेकर गीतन के केतना लोग गावता—जेकरा साहित्य के केतना लोग पढ़ता जे परम चेतना स्वरूप विद्यामाता के दुलरूआ बालक हवन। देवी के दुअरिया इनके खातिर खुलत रहेला जब चाहेलन तबे माई के पास जाके शक्ति भक्ति दृष्टि ले के आवेलन अउर सदा आनन्दलोक में भ्रमण करेलन।। आज लोग माई के भुलवले जाता इ नयका लोगन क संस्कार ह ऐही से आज के लोग अन्नदर से सरस नइखे रह गइल सुख गइल बा उनकर भीतर के बात, उनकर मन।।

जीतेन्दर भाई हमेशे कहेलन और फिर से सबके याद दिलावतारन कि भाई लोग सुन लोग जान जा लोग अन्त में माई के दुअरिया जाये के पड़ी। इ संसार में के बा जे माई जइसन प्यार करी—माई जईसन दुख पड़ला पर दुलार करी, लोर पोछी पुचकार के अपना में मिल ली— अउर बार-बार जीवन में उमंग भरी। माईये सर्वस्वरूपा हई, सर्वेश्वरी हई, सर्वाधार हई, ज्ञानस्वरूप हई, भक्ति स्वरूपा हई, परमानंदिनी हई— हम सुनले बानीं संत ज्ञानी लोग के मुँह से हमरा कुछ मालूम नइखे। जीतेन्दर भाई हमरा के मानेलन— कुछ किरपा करिहें अउर माई से आशिवार्द दिलवा दिहें तो शायद हमरो कुछ ज्ञान हो जाय शक्ति मिल जाय भक्ति मिल जाय— हम का कहीं का लिखी कुछ बुझात नइखे बड़ भाई के नाते जीतेन्द्र के आर्शिवाद देत बानी— फलस फूलस अउर इ संसार के लोग के अपना गीतन के माध्यम से सरस बनावस।।

संसार के लोग हमरा बहुत सुखल लागत बाड़न जा। संगीत गीत के बिना कौन जीवन में आनन्द बा। आनन्द मिलबो कइसे करी। आनन्द ना रहित त काहे के कृष्ण मुरली पकड़तन, नृत्य करतन, काहे शंकर जी डमरू पकड़तन, काहे के गणेश जी पखावज पकड़तन—संगीत के महिमा है— गीत के महिमा जीतेन्दर सिंह भाग्यवान बाड़न कि दूनो के रंग में रंगल बाड़न।

नंदन
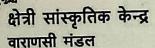
हार्दिक शुभकामनाएँ

भारतीय लोक संस्कृति मानवीय अस्तित्व की उस अक्षुण्ण परम्परा की निरंतरता का द्योतक है जो युगों से अस्तित्व चेतना को आधार प्रदान करती रही है। लोक संगीत मानवीय संबेदनाओं की सशक्त अभिव्यक्ति का सरल स्वरूप प्रस्तुत करता है केवल यही नहीं अनुशासन के रूप में नियमबद्ध होकर कार्य करने का प्रतीक, यह लयबद्ध उद्गार, सम्पूर्ण मानवीय सांस्कृतिक परिवेश को एक विशिष्ट आयाम प्रदान करता है। श्री जीतेन्द्र सिंह ''जीत'' द्वारा माटी से जुड़े व्यक्तियों के लिये अनुष्ठान आरम्भ किया गया है, माँ सरस्वती से मेरी प्रार्थना है कि कवि के ऊपर इसी प्रकार अपने आंचल की छाया बनाये रहें। समस्त सुबुद्ध व सहज व्यक्तियों के स्वामी– जनों द्वारा इस अनुष्ठान में अपने-अपने तरह से आहुति दी जा रही है। निश्चित रूप से जो लय व शैली उभर रही है, वह आने वाले समय में भारतीय संगीत की दिशा निधारित करने में सहयोग करेगी।

''जाइब देवी के दुअरिया'' अस्तित्व बोध की चेतना के अध्यात्मिक पक्ष से सम्बन्धित है। लोक धुनों की मिठास एवं अध्यात्मिक प्रसंग के उद्गार मन को झकझोरने में पूर्णतः सफल हैं। माँ भगवती कृपा करें।

डा० रत्नेश वर्मा

स्नेहाशीष
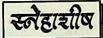
लोक जीवन में जहाँ जिनिगी के चढ़ाव उतार कै सिलसिला चलत रहैला ओही में अनेक प्रकार के सुख-दुख कै अनुभव होला जउने से प्राणी के भीतर क्षमा, दया, करुणा सहनशीलता अइसने भावनाा कै उत्पत्ति होले। लोकगीत लोकजीवन कै अइसन दर्पन हौ जउने में ओकर प्रतिबिम्ब उभर के सामने आवैला। एही क्रम में भक्ति गीतन कै एक धारा प्रवाहित होले जउने में रमिके लोगन के सुख और शान्ति मिलैला। भक्ति गीतन के क्रम में लोक भजन यात्रागीत अउर देवी गीतन कै प्रचलन बहुत हौ। एहू में देवीगीत कै मात्रा और धुन सर्वाधिक देखै सुनै में आवैला। देवी माँ आदिशक्ति के रूप में स्थापित हईं। अपनी महतारी से अदमी उऋण नाहीं हो पावैला फिर जे सबकर महतारी बा ओसे उऋण होये कै बात त सोचही के नाहीं बा। ओकरे प्रति हिरदय में श्रद्धा भक्ति कै भाव बनल रहै, ओही भाव से भरि के लगातार माई के आराधाना कै गीत गुनगुनात रहै इहै मातृ भक्ति जिनिगी के भटकाव से मोड़ के सुडहरे ले जाये में समरथ बा।

''जाइब देवी के दुअरिया'' अपने भाई जीतेन्द्र नाथ सिंह ''जीत'' कै कृति हौ जउने में अनेकानेक लोकधुनन में देवी माता कै आराधना समाइल बा। भाई ''जीत'' जी एक समर्पित भाव रखै वाला रचनाकार हउवैं। इनकर श्रद्धा भक्ति इनके गीतन में उभर के आइल बा। एह कृति खातिर भाई जीतेन्द्र नाथ सिंह ''जीत'' के बहुतै बधाई, साथै ई मंगलकामना कि ई सब गीत जन-जन में पसरि के लोगन के कंठ से फूटै। ई कृति लोकप्रियता अर्जित करत ''जीत'' जी के रचना प्रक्रिया में प्रेरक बनै इहै कामना करत बानी।

हरिराम द्विवेदी

डॉ० कैलाश नाथ सिंह
उपाध्यक्ष
विश्व क्षत्रिय महासभा एवं
सचिव
बीकन नर्सरी स्कूल,
महमूरगंज, वाराणसी

डी० ६३/१–जी
गोबिन्द नगर
महमूरगंज वाराणसी
फोन– ३६०८०५

हार्दिक शुभकामनाएँ

आदि शक्ति जगत जननी जगदम्बा के चरणों में लोकगीतों के संकलन ''जाइब देवी के दुअरिया'' के माध्यम से पुष्प समर्पित करके भाई जीतेन्द्र नाथ सिंह ''जीत'' भोजपुरी गीतों के एक सशक्त हस्ताक्षर बन गये हैं।

भोजपुरी के अनेक धुनों में गीतों को लिखकर जहाँ एक ओर लुप्त हो रही भोजपुरी संस्कृति को टी-सिरीज के कैसेटों के माध्यम से हर हिन्दी भाषी क्षेत्रों में पहुँचाकर पुनर्जागृत कर दिया है, वहीं जीतेन्द्र नाथ सिंह ''जीत'' भी तद्नुसार लोकप्रिय गीतकार की पहचान बन गये है।

माँ जगदम्बा की प्रतिमूर्ति माँ सरस्वती आपकी लेखनी में विराजमान हो और काशी की गीत–संगीत की गरिमा को आप चार चाँद लगावें।

डॉ० कैलाश नाथ सिंह

आचार्य अनिरूद्ध प्रसाद त्रिपाठी डी० ६५/१०९
कवि—समीक्षक लहरतारा, वाराणसी

शुभाशंसा

आकाशवाणी के लोक गायक, गीतकार श्री जीतेन्द्र नाथ सिंह "जीत" द्वारा विरचित "जाइब देवी के दुअरिया" विभिन्न भोजपुरी गीतों का संग्रह है, जो अपनी विशिष्टता और विविधता के कारण संग्रहणीय बन गया है। घनीभूत संवेदना के संवाहक होने के कारण सहज संप्रेषित हो, ये गीत जनमानस में अपना स्थान बना कर निरन्तर प्रतिस्पंदित करते रहते हैं। सीढ़िया चढ़लो न जाय पहुँचत पउवाँ पिराय... "मैं अपनी वयक्तिक पीड़ा के साथ ही उस बृहत्तर जनसमुदाय की पीड़ा सामने आ खड़ी होती है जो माँ के चरणों में समर्पित तो होना चाहता है, लेकिन अस्वस्थता तथा दुर्बलता आदि कारणों से अपनी आर्त्त विवशता को ढोता हुआ दिखाई पड़ता "नरियर चुनरी जुटवली, फुलवा मालिन से मंगवली मन मनवली कुछ कहलो न जाय" की मनोरमता अपनी पवित्रता और कोमल अर्थच्छायाओं से अन्तर्मन को इस तरह अपने क्रोड में ले लेती है कि श्रोता या पाठक बहुत देर तक चित्रार्पित— सा हो जाता है.....।

मीत "जीत" के देवी गीत "सर्वरूपमयी देवी सर्व देवीमय जगत" की अन्वर्थता के संवाहक बन इस समाज को दिव्य संदेश देते हुए हमारा सहज संस्कार करेंगे— यह पूर्ण विश्वास है।

मैं "जीत" जी के सुखद भविष्यत् की कामना करता हूँ।

आचार्य अनिरूद्ध प्रसाद त्रिपाठी

दर्वेश्वर नाथ त्रिपाठी
"गोविन्दाचार्य"

भू० पू० अपर परियोजना निदेशक
एवं
खण्ड बिकास अधिकारी
मधु सूदन प्रसाद दूबे एडवोकेट
योग कुटीर
विजयपुर कोठी, मिर्जापुर

देवी के वरद पुत्र के प्रति

श्री जीतेन्द्र नाथ सिंह ''जीत'' के लोक भाषा के गीतों के पुस्तकों की पढ़ा। इनके लोक गीतों में मिठास सहज भावों की अभिव्यक्ति एवं भक्ति रस की अविरक्त धारा प्रवाहित होती है। मेरे बिचार से लोकगीतों के माध्यम से सामान्यजन मानस में भक्ति ज्ञान, एवं वैराग्य की त्रिवेणी का जितना सबल एवं सशक्त प्रवाह ''जीत'' जी की रचनाओं में है। वह अन्यत्र दुर्लभ है। अनन्त शक्ति माँ विन्ध्यवासिनी से प्रार्थना है कि श्री जीतेन्द्र नाथ ''जीत'' वही भाव ''जाइब देवी के दुअरिया'' पुस्तक में भी प्रवाहित करके निष्काम कर्म के भागी बने तथा माँ दुर्गा की कृपा प्राप्त करें। माँ विन्ध्यवासिनी अपनी अमोघ कृपा दृष्टि कर इनके वाणी में सतत् बैठ कर नये-नये गीतों के लिखने का सद्विचार देती रहें। जिससे पुर्वाचंल के कवियों में श्री ''जीत'' जी का नाम उमर रहें।

इति माँ शरणम्

भवदीय
दर्वेश्वर नाथ त्रिपाठी
"गोविन्दाचार्य"

डा० रविन्द्र कुमार ओझा
(नेत्र रोग विशेषज्ञ)

आर० के. नेत्रालय
मोतीझील महमूरगंज
वाराणसी

हार्दिक शुभकामनाएँ

जीतेन्द्र जी के रचनओं में पूर्वांचल की धरती और यहाँ के लोगों के प्रति इनका अटूट लगाव दिखता है। मूझे पूर्ण विश्वास है कि सभी भोजपुरी प्रेमी इनके गीतों को पढ़ेंगे गायेंगे और आनन्दित होंगे।

शुभकामनाओं सहित

डा० रविन्द्र कुमार ओझा

श्रीमती मृदुला भट्टाचार्या
कार्यक्रम अधिशासी
आकाशवाणी,
वाराणसी (उ.प्र.)

आवासः
४८ शिवाजी नगर कालोनी
महमूरगंज, वाराणसी
फोन नं. - ३६२७२२
कार्यालय फोन - ३६१०५३

शुभ उक्ति

संगीत साहित्य और कला के सृजन का आधार है, अभिव्यक्ति और संवेदना। भाई जीतेन्द्र नाथ सिंह 'जीत' की रचनाओं में मानवीय भावनाओं के सारे आयाम समाहित हैं। उनकी रचना संग्रह ''जाइब देवी के दुअरिया'' प्रत्येक गीतकार, संगीतकार को प्रेरित करेगा, गुनगुनाने के लिए। उनका यह प्रयास उत्कृष्ट स्थान प्राप्त करे यह मेरी शुभकामना है।

श्रीमती मृदुला भट्टाचार्या

पुष्पा मिश्रा आकाशवाणी वाराणसी
उद्घोषिका

हार्दिक शुभकामनाएँ

भोजपुरी लोकगीतों के प्रति ''जीत'' जी का मनन चिन्तन एक अलग प्रकार का हस्ताक्षर साबित हुआ है। सरल सुबोध भाषा के माध्यम से ''जीत'' जी सामान्य जन जीवन से जुड़े विभिन्न प्रकार के गीतों की रचना की है, जिसकी एक बानगी के रूप में उनकी पुस्तक ''गीत गुन्जन'' आम जनता के बीच पहुँच चुकी है। अपने दूसरे प्रयास में जीत'' जी ने ''जीत बावनी'' और '' जाइब देवी के दुअरिया'' में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। घर आंगन से लेकर पर्वत पहाड़ पर बसने वाली जगमाता के अनेकानेक रूपो का वर्णन इस संग्रह का मुख्य आर्कषण है। ''जीत'' जी ने अपने इस संग्रह में पचरा, चैती, कजरी, पूर्वी, छपरहिया, बिदेसिया, दादरा, कहरवा, लचारी, जैसे विभिन्न प्रकार के लोक धुनों को अत्यन्त बारीकी से समेटा है जिनके बोल सहज ही मन को अहलादित कर जाते हैं। ''जीत'' जी के इस गीत यात्रा में कोई भी धाम छूटा नहीं हैं। विन्ध्याचल से लेकर मैहर तक ही नहीं बल्कि वैष्णव देवी और कामाख्या भगवती के आलावा रचनाकार ने शक्ति स्वरूपा के विभिन्न रूपों को अपना प्रणांम निवेदिता किया है।

महाशक्ति महामाया जग जननी जगदम्बे को गीतों का शब्दाहार पहनाने वाले रचनाकर जीत जी के प्रति हमारी शुभकामना है कि आपका समस्त जीवन इसी प्रकार के श्रेष्ठतम कार्य में व्यतीत हो ताकि, अपनी माटी का गौरव बढ़ता रहे।

बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाओं के साथ

पुष्पा मिश्रा

अजीता श्रीवास्तव
लोकगीत गायिका
सदस्य, कार्यक्रम सलाहकार समिति
आकाशवाणी, वाराणसी

पंचवटी
१४५, अवास विकास कालोनी
मीरजापुर दूरभाष : ६२५५७

शुभकामना

श्री जीतेन्द्रनाथ सिंह ''जीत'' भोजपुरी रचनाकारों में एक ऐसा नाम हो गया है जो आजकल के लगभग समस्त गायक गायिकाओं के जेहन में बैठ चुका है। ''जीत'' जी की रचनायें पारम्परिक ही कही जा सकती हैं। देवी के गीतों में आपने अपनी समस्त बौद्धिक उर्जा लगा दी है जिसे गीतों में प्रवाह की धारा तो है ही, अनेक नये धुनों में देवी कर्णप्रिय हो गए हैं। गीत गुंजन, ''बजे मेरी वीणा के तार'' को देखने का शुभ अवसर मिला। दोनों पुस्तकें ''जीत'' जी की अनूठी बेजोड़ और हृदय ग्राही रचनाओं से भरपूर हैं। भोजपुरी गीतकारों में ''जीत'' जी ने अपनी अमिट पहचान बना ली है। हम लोग काफी अरसे से ऐसे कवि हृदय और गीतकार की खोज में थे जिससे हम भोजपुरी गायक गायिकाओं को अच्छे गीतों के माध्यम से उत्कृष्ट पहचान बने।

''जीत'' जी को बधाई है जिन्होंने हमारी आशाओं और खोज को मूर्त रूप दिया। ''जीत'' जी से हम काफी आशा लगाए हुए हैं और विश्वास है कि भविष्य में इनसे काफी कुछ सीखने का अवसर मिलेगा। जाइब देवी के दुअरिया भी आप की लगभग तैयार है और हम जीत जी को अग्रिम बधाई देते हुए इन्हें अपनी हार्दिक शुभकामना देते हैं।

प्यार साहित

अजीता श्रीवास्तव

आपन बात

जय अम्बे जगदम्बे सम्मो शीतला महरानी, माई अन्नपूर्णा, देबी संकठा, विन्ध्याचल भवानी, माँ कामाख्या देवी, दुर्गा देवी, बनसत्ती मइया, शैलपुत्री, पार करिहऽ नइया, वैष्णो देवी मइया रउरे चरण के आस बा, मइया मइहर वाली जीत बनल राउर दास बा, माई कटेसरी भवानी पातेपुर कऽ देई जगता, माई सुरसतिया के कंठ सुरे पहिल नेवता दीन हीन दुखियारी देवी रउरे दुअरिया भगतन के पीर रउरा हरी मयरिया लोक धुन कै मिठास मन के भा गइल, कइसे करीं बखान गुनगान लिखा गइल, मइया देवी के गुनगान भला लिखले लिखाई, माई क रिनिया कबो केहू से भराई ''गीत गुंजन'' ''जीत बावनी'' ''जाइब देवी के दुअरिया सबही पर किरिपा करिहा मोरी मयरिया, सुख पावै जिया जुड़ावै, मन भावै सब गावै, चइती, सोहर, झूमर, कजरी, 'मेला गीत, पचरा, पूर्वी, छपरहिया, विदेसिया, कहरवा, खेमटा, दादरा, देवी गीत, गावै खातिर लोक धुन में प्रयास बा, मूल गलती के माफी चाहीं आशीर्वाद के आस बा, माई के चरन पूजब दिन रात सुबह शाम, सकल पंच के जीत कऽ सादर परनाम।

अपने सभै क आपन

जीतेन्द्र नांथ सिंह

चइती

जाइब देवी के दुअरिया ही रामा
हीत भीरहरिया - - - - - - - - जाइब

देवी दुआरे बाजे अनघ बधइया
मइया झूले निबिया की डारिया ही रामा
हीत भीरहरिया - - - - - - - - जाइब

बेइला चमेली के माला मँगइबे
संगवाँ में नरियर चुनरिया ही रामा
हीत भीरहरिया - - - - - - - - जाइब

हिये बसी मोरे माई के सुरतिया
देईहैं दरस मोरी मयरिया ही रामा
हीत भीरहरिया - - - - - - - - जाइब

सुनिला अरज बाटे जबले जिनिगिया
पुजबै चरन बनि पुजरिया ही रामा
हीत भीरहरिया - - - - - - - - जाइब

देवीगीत

जय जय अम्बे जय जगदम्बे
अरज करीं करजोर
जननी 'जीत' शरण में मइया
बिनती सुनिला मोर

माई जगदम्बा के आरती उताराही
मइया के महिमा अपार जी

माथे मुकुट सोहै जड़ल रतनवाँ हो
चमकेले बिंदिया लिलार जी।

कानन कुण्डल नाके नथुनियाँ हो
गरवा में फुलवन के हार जी

कटि करधनियाँ चरन पयजनियाँ हो
परग करइ झनकार जी

माई के अंगे सोहै लाली चुनरिया हो
गोटवा लगल चटकार जी

साजिके पूजा के थार धराइल
छबि लखि ललचै सिंगार जी।

बिदेसिया

नाहीं चाहीं सोना चानी कवनी रतनवाँ हो
नाहीं। हीरा मोतीयन के हार
असरा लगल बाटे दे दा दरसनवाँ हो
सुरसति मइया हमार।

तुलसी कबीर सूर सबही के ज्ञान दिहलू।
सबही के सुनलू गोहार
लेखनी के लूर देदा जीत के जननी
पूजँबे चरनवाँ तोहार

सुरसति मतवा जोड़ीला दूनो हथवा हो
माई मोहें राखि लेहू, अपनी सरनियाँ
हथवा में बीणा सोहै हंस के सवरिया
सारदा भवानी कहिके करीं सुमिरनियाँ

पूजवा के रीत हम ना जानी मइया हो
करत रहीला बस भाव से भजनियाँ
असरा लगल बाटै गाइब गुनवाँ हो
मइया बतादा कउनी जुगुति जतनियाँ

धरीला धियान ज्ञान बुद्धि देदा सबही के
काटा कलेस नाहिं भुलबै करनियाँ
सारधा के सिवा मोरे पास बाटै कुछ नाहीं
मोरे लेखे सबकुछ तोहरे चरनियाँ

लागलि लगनियाँ सीतला माई के चरनियाँ
ही सरनियाँ रहबे ना, ही सरनियाँ रहबे ना,
करँबै कउनी जतनियाँ . . . . ही सरनियाँ

गंगा जी के तीरवाँ, बनल सुघर मंदिरवा
ही सरनियाँ रहबे ना, ही सरनियाँ रहबे ना, चमके
चानी कै चननियाँ . . . . ही सरनियाँ

कहीं असरा लगाई, रहिहा सब पर सहाई
ही सरनियाँ रहबे ना, ही सरनियाँ रहबे ना
दरसन दे दा महरनियाँ . . . . . ही सरनियाँ

पालत पूजा वाली रीत गुनवाँ गावत रहिहैं 'जीत'
ही सरनियाँ रहबे ना, ही सरनियाँ रहबे ना
मइया भूलँबै ना करनियाँ . . . . . ही सरनियाँ

पचरा

अइलें नर-नरिया, मइया तोहरी दुअरिया
हो सहइया होखऽ ना, हो सहइया होखऽ ना,
बोझलि दुखवा से नइया . . . . . हो सहइया

साती बहिना के सुरतिया, देखत रहती दिन रतिया
हो सहइया होखऽ ना, हो सहइया होखऽ ना,
देबै देवी कऽ दुहइया . . . . हो सहइया

फुलवन कऽ हार लेइके करिला गोहार
हो सहइया होखऽ ना, हो सहइया होखऽ ना,
खप्पर देबै हम अंगनइया . . . . . हो सहइया.

गुनवाँ गाइब देई माई, सब पर रहिहऽ सहाई
हो सहइया होखऽ ना, हो सहइया होखऽ ना,
करबै सब दिन पुजइया . . . . . . हो सहइया

देवी के पावन चरनियाँ में लागलि लगनियाँ न हो ललना मन भावै मइया के मंदिरवा नियरवा बसि जइतीं न हो ....

फुलवा फुलइलैं फुलवारिया गमकै दुअरिया न हो ललना मइया झूलैं निमिया की डरिया झलुअवा झुलइतीं न हो .....

बाजै बधावा चढ़ावा चढ़ै नरियर चुनरिया न हो ललना हमहूँ चढ़इबै पियरिया भगवती के मनवतीं न हो ....

देवी दिहैं दरसनवाँ त सुघर ललनवाँ न हो ललना अंगना में हीरिला खेलवतीं त गोतिनी बोलवतीं न हो ....

मइया मोरी मनसा पुरइती त जीत कै बोलवतीं न हो ललना बाबू के बधइया रुपइया त सोहर गववतीं न हो ....

मइया के धमवा चला चलीं जा बिरनवाँ
हमरे संगवाँ चला ना, हमरे संगवाँ चला ना,
देवी देईहें दरसनवाँ हमरे संगवा ..

उँचइ धाम ध्वजा फहराय माई क मंदिर सोहाय
हमरे संगवाँ चला ना, हमरे संगवाँ चला ना,
मनवाँ भावेला भवनवाँ- हमरे संगवा ..

सबसे सुनी दिनवाँ रतिया, भांवे मोहनीमुरतिया
हमरे संगवाँ चला ना, हमरे संगवाँ चला ना,
तरसे देखन के नयनवाँ - हमरे संगवाँ ...

देवी दुअरे दरबार, माई के महिमा अपार
हमरे संगवाँ चला ना, हमरे संगवाँ चला ना,
सबही पूजेला चरनवाँ हमारे संगवाँ ...

नरियर चुनरी चटकार लेइके फुलवन के हार
हमरे संगवाँ चला ना, हमरे संगवाँ चला ना,
कइके कउनो जतनवाँ - हमरे संगवाँ ..

लागल "जीत" से पिरीत मनवाँ भांवे देवी गीत
हमरे संगवाँ चला ना, हमरे संगवाँ चला ना,
पूरा होईहे अरमनवाँ - हमरे संगवाँ ..

यात्रा गीत

मयरिया मोरी झुलेली, निबिया के डार हो

मथवा मुकुट सोहे सुघर सुरतिया रामा
भावे चुनरिया चम चम चमके लिलार हो
मयरिया मोरी झुलेली, निबिया के डार हो

झूलत-झूलत गावत बेरिया बिसवली हो
पहिले पूछेली कहवाँ मालिन हमार हो
मयरिया मोरी झुलेली, निबिया के डार हो

फुलवा लोढ़त मिललीं मइया के मलिनिया रामा
भरल डलइया चम्पा जुहि कचनार हो
मयरिया मोरी झुलेली, निबिया के डार हो

तोहरी चरनियाँ लागल 'जीत' के लगनिया हो रामा
नइया लगादऽ मइया हमरो किनार हो
मयरिया मोरी झुलेली, निबिया के डार हो

देवीगीत

उँचइ पहाड़ पर बसेलू मीरी मइया
बसेलू मीरी मइया चढ़इया मीसे
चढ़ली ही नाहीं जाय .... चढ़इया...

मइहर वाली के मनाई, वैष्णी देवी के गुन गाई
वैष्णी देवी के गुन गाई कइसे आई
कइसे आई मीसे चलली ही नहीं जाय
चढ़इया मीसे चढ़ली ही नाहीं जाय ... चढ़इया...

माई के सुघर सुरतिया, सुनीला दिन रतिया
सुनीला दिन रतिया, दरस बिनु, दरस बिनु
रहली ही नाहीं जाय ... चढ़इया मीसे
चढ़ली ही नाहीं जाय .... चढ़इया ..

नरियर चुनरी जुटवलीं, फुलवा मालिन से मँगवलीं
फुलवा मालिन से मँगवली, मन मनवली,
मन मनवलीं, कछु कहली ही नाहीं जाय
दरस बिनु रहली ही नाहीं जाय चढ़इया ..

हार होइ चाहे जीत
मइया जानब बूझब रीत, गीत गवला बिनु
गीत गवला बिनु गवली ही नहीं जाय
दरस बिनु रहली ही नाहीं जाय – चढ़इया ..

देई माई के चरनियाँ में बसै मीरा मनवाँ
देवी दरसनवाँ देईहैं ना
तरसैं हमरी नयनवाँ - - - - - - - - - देवी

गँउवाँ के बिचवा बनल माई के मंदिरवा
पिपरा क पेड़ भारी भँवैला नियरवा
हुलसैला हिया देखि देवी कै धमवा
देवी दरसनवाँ देईहैं ना
सैवा सँझिया बिहनवाँ - - - - - - - - देवी

पातेपुर के देई कै चहुँदिसि किरितिया
लोगवा मनौती मानै करैलै बिनतिया
बहुतै दयालु देवी हरैलीं कलेसवा
देवी दरसनवा देईहैं ना
सबही पूजेला चरनवाँ - - - - - - - - देवी

धूप धार खप्पर चढ़ैला पियरिया
"जीत" जुटाके जइहा देवी के दुअरिया
मनसा पुरईहैं मइया करिहा जतनवाँ
देवी दरसनवाँ देईहै ना - - - - - - - देवी
तब जुड़ईहैं परनवाँ - - - - - - - - - देवी

छपरहिया

देवी के चरनिया में लागलि लगनियाँ
ही सरनियाँ रहबै
चंचल मनवाँ धरी-धीर-ही सरनियाँ०

उँचइ पहाड़ पे मइया के मंदिरवा
मनवाँ कहैला रही रउरे नियरवा
जग-मग जोतिया जरैले दिन रतिया
ही सरनियाँ रहबै
लागेला भगतन के भीर-ही सरनियाँ०

धनि-धनि मइहर वाली महरनियाँ
आल्हा-उदल जेकर पूजलें चरनियाँ
रनवाँ में राखत रहली परगट पनियाँ
ही सरनियाँ रहबै
लोहा मनलें बड़-बड़ बीर-ही सरनियाँ०

फल फूल धूप धार नरियर चुनरिया
'जीत' जुटाके जइहा देवी के दुअरिया
बहुते दयालु हईं हमरी मयरिया
ही सरनियाँ रहबै
दु:खियन के हरेली पीर-हीसरनियाँ०

बिनती सुना हो महरानी
सरनियाँ में आइल बानी

पहिले पूजब सैल पुत्री चरनियाँ
गुन गईबै दुर्गे महरनियाँ
कइसे माँ महिमा बखानी — सरनियाँ.

माई अन्नपूर्णा कै पूजब पँउवाँ
सुनीला कि बहुतै दयालु हई रउवाँ
पीर हरा हऊ बड़ी दानी — सरनियाँ.

मइया दुआरे बाजै बधइया
नरियर चुनरिया चढ़ावा रुपइया
केहू चढ़ावै सोना चानी — सरनियाँ.

हे अम्बे जगदम्बे सबकी मयरिया
तोहरे दरस खातिर तरसैं नजरिया
किरपा करा हे भवानी — सरनियाँ.

दादरा

दरस बिनु तरसैं मौरे नयनवाँ

सुनलीं राउर सुघर सुरतिया
कइसे करीं मैं बखनवाँ
दरस बिनु तरसैं मौरे नयनवाँ

मंदिर — मंदिर मूरत देखलीं
चमकै जड़ल रतनवाँ
दरस बिनु तरसैं मौरे नयनवाँ

दुअेर हलरै निमिआ कै गछिया
मइया झूलैं झूलनवाँ
दरस बिनु तरसैं मौरे नयनवाँ

गावत गीत "जीत" मन भावै
हुलसल रहइँ परनवाँ
दरस बिनु तरसैं मौरे नयनवाँ

कहरवा

रउरी दुअरिया देवी दुखिया पुकारे
कलेसवा कबले कटबू हमरी मयरिया

बिनती करीला देवी विंध्याचल भवनियाँ
बिपतिया कबले हरबू हमरी मयरिया ....

भक्तन कै भीड़ लागल तोहरी दुअरिया
खबरिया कबले लेबू हमरी मयरिया

सबहीं चढ़ांवै मइया नरियर चुनरिया
सरनियाँ सबके रखबू हमरी मयरिया

रहिया निहारै "जीत" जानै ना जुगुतिया
दरस कब देबू हमरी मयरिया ....

झूमर

मनवाँ कै सधिया पुरइबै पिया
जइबै देवी दुअरिया ही

ऊँचे पहाड़न पर मइया के धमवाँ
देखन के तरसै नजरिया पिया
जइबै देवी दुअरिया ही ———

सखिया सहेलियन के संगवाँ-संगवा
नौ दिन रहब फलहरिया पिया
जइबै देवी दुअरिया ही ———

फल फुलवन से थार सजाके
नरियर चढ़इबै चुनरिया पिया
जइबै देवी दुअरिया ही ———

देवी गीत 'जीत' मन भावै
पुजबै चरन बनि पुजरिया पिया
जइबै देवी दुअरिया ही ———

बिदेसिया

मनवाँ बसेला मइया रउरी चरनियाँ
अपनी सरनियाँ में रखिला मयरिया

मथवाँ मुकुट सोहै तोहरे मयरिया
तोहरे मन भावै माई नरियर चुनरिया

चम-चम चमकेला मइया के मंदिरवा
सबसे सुनिला पूजा करैलैं पुजरियाँ

केहू चढ़ावै सोना चाँदी रूपइया
सेवा करब हम सगरी उमिरिया

धीर धरत नाहीं चंचल मनवाँ हो
देवी दरसनवाँ के तरसे नजरिया

''जीत के बतादा मइया कउनो जतनियाँ
हथवा जोड़ीला हम निपट अनरिया

लचारी

चला हो बिरना, दुर्गा देवी के दुअरिया
देई माई के दुअरिया — चला.

होंते बिहनवाँ होइहैं देवी दरसनवाँ
चला हो बिरना, हे चला हो बिरना
चलबै होंते भोरहरिया — चला.

पियरी कराह खप्पर अजुँवै जुटायला
चला हो बिरना, हे चला हो बिरना
संगवाँ नरियर चुनरिया — चला.

उड़उल के फुलवा भइया भूल मत जइहा
चला हो बिरना, हे चला हो बिरना
उहवें मिलिहैं पुजरिया — चला.

कटिहैं कलेस कबों करबा सुमिरनवाँ
चला हो बिरना, हे चला हो बिरना
पीर हैरेलीं मयरिया — चला.

भक्ति-भाव रस रीत लेला मनवाँ के 'जीत'
चला हो बिरना, हे चला हो बिरना
उगल रहिहैं फुलवरिया — चला.

देवीगीत
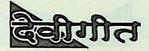
जय-जय जय दुर्गे महारानी, देवी विंध्याचली-भवानी
मइया आइल बानी तोहरी दुअरिया हो
दरसन, देदऽ देदऽ देदऽ मोरी मयरिया ना - -

गरवा में हार भावे, हथवा कटरिया
सुघर सुरतिया सोहै शेरवा सवरिया
सारा जग पँउवाँ पूजै बनिके पुजरिया
दरसन, देदऽ देदऽ देदऽ मोरी मयरिया ना - -

चम-चम चमके मइया कऽ मंदिरवा
सब सुख पावैं लोगवा बसिके नियरवा
आइके चढ़ावै केहू नरियर चुनरिया
दरसन, देदऽ देदऽ देदऽ मोरी मयरिया ना - -

केतना बखानी मइया देदऽ दरसनवाँ
रहिया निहारि हारै "जीत" कऽ नयनवाँ
मनवाँ न धीर धरै बीतली उमरिया
दरसन, देदऽ देदऽ देदऽ मोरी मयरिया ना - -

मन बसे मइया के चरनियाँ
सब सुख देवी के सरनियाँ

लाल ध्वजा फहँरैला माई के मन्दिरवा
जहवाँ बिराजैं महरनियाँ
सब सुख देवी के सरनियाँ....

रतन जड़ल बाटे माई के मुकुटवा
नीक लागै नाकी के नथुनियाँ
सब सुख देवी के सरनियाँ....

पान, फूल, धूप, धार, नरियर, चुनरिया
केहू चढ़ावै सोना चनियाँ
सब सुख देवी के सरनियाँ....

अम्बे जगदम्बे देवी दुर्गा महरानी
विन्ध्य माई के भावै भजनियाँ
सब सुख देवी के सरनियाँ....

देवीगीत (कहरवा)

चानी के चउकठ सोने कै कलसवा
मनसा पुरावैली मोरी मइया ....

अम्बे, जगदम्बे सम्भे सीतला महारानी
मइहर वाली मइया देबी विन्ध्याचल भवानी
काली कहावैली मोरी मइया — मनसा०

भगतन कै भीड़ लागै देबी के दुअरिया
करै जयकार लेइके नरियर चुनरिया
कलेसवा मेटावेली मोरी मइया — मनसा०

देबी दुआरे बाजे अनध बधइया
पियरी कराह खप्पर चढ़े अंगनइया
बिगरल बनावैली मोरी मइया — मनसा०

भावैला मन मोरे मइया के गीत ही
असरा लगाई माई जाहिलै 'जीत'' ही
जियरा जुड़वावेली मोरी मइया — मनसा०

चइती

बिनयीं बिन्ध्याचल भवानी हो रामा
देबी बरदानी — बिनयीं०

विन्ध्य पहाड़ पे देवी के धमवाँ
केतना मैं महिमा बखानी हो रामा
देबी बरदानी — बिनयीं०

सबही से सुघ्घर माई के सुरतिया
जाने चतुर नर ज्ञानी हो रामा
देबी बरदानी — बिनयीं०

पान फूल धूपधार नरियर चुनरिया
केहू चढ़ावै सोना चानी हो रामा
देबी बरदानी — बिनयीं०

पूजबै चरन कउनो जतन बताइदा
राखहु 'जीत' के पानी हो रामा
देबी बरदानी — बिनयीं०

देवीगीत

डफ बाजै मंजीरा ढोल
बोला हो मोरी मइया की जय

मइया के गरवा में माला सोहे
मथवा मुकुट अनमोल
बोला हो मोरी मइया की जय

चम चम चमके माई के मंदिरवा
निरखें नयनवाँ टटोल
बोला हो मोरी मइया की जय

देबी दुआरे हरी-हरी गँछिया
पंछी करैलै किलोल
बोला हो मोरी मइया की जय

सब संतति की खातिर मइया
राखें केवड़िया खोल
बोला हो मोरी मइया की जय

देवीगीत (लचारी)

मन मीरा बसी मइया, तोहरी चरनिया
सबही के असरा तोहार, पार मोरी कइदऽ नवरिया

मथवा मुकुट सभै भावेली सुरतिया
चम-चम चमके लिलार, पार मोरी कइदऽ नवरिया
सबही के असरा तोहार, पार मोरी कइदऽ नवरिया

जग मग जोतिया जेरेलै दिन रतिया
चहुँ दिसि लगे उजियार, पार मोरी कइदऽ नवरिया
सबही के असरा तोहार, पार मोरी कइदऽ नवरिया

हमहूँ चढ़इबै मइया नरियर चुनरिया
सगवा कपूर धूप धार पार मोरी कइदऽ नवरिया
सबही के असरा तोहार, पार मोरी कइदऽ नवरिया

आठो पहर मइया गुन हम गइबै
रखि लेहू लजिया हमार, पार मोरी कइदऽ नवरिया
सबही के असरा तोहार, पार मोरी कइदऽ नवरिया

जेकरे पीरित चरनिया में तोहरे
बनई "जीत" गर हार, पार मोरी कइदऽ नवरिया
सबही के असरा तोहार, पार मोरी कइदऽ नवरिया

देवीगीत

जय सर्वेश्वरी भवानी, केतनी महिमा बखानी
मइया जिनिगी भर पूजबै चरनवा ना
देबी देदा देदा देदा दरसनवाँ ना
देबी दरसन खातिर तरसैं नयनवाँ ना

कलकत्ता में काली, विन्ध्याचल विन्ध्यभावानी
वैष्णो देवी ज्वाला माँ मइहर की महरानी
कतहू परबत पे डेरा, कहीं गंगा तट बसेरा
मइया शेरवा सवारी भावै मनवाँ ना
देबी देदा देदा देदा दरसनवाँ ना
देबी दरसन खातिर तरसैं नयनवाँ ना

सबदिन सँझिया बिहान, जोगी जती धरैलें ध्यान
लेइके फल, फूल, पान पँउवाँ पूजेला जहान
माँगे निर्धन औ धनवान, औघड़ जोहिलें शमशान
कउनो जुगति बताइदा जतनवाँ ना
देबी दरसन खातिर तरसैं नयनवाँ ना
देबी देदा देदा देदा दरसनवाँ ना

लोगवा दूर-दूर से आवैं, सबही देवी के गुन गावैं
नरियर चुनरी चढ़ावै, माई कोख जुड़वावैं
मइया मनसा पुरावैं, 'जीत' जयजयकार लगावैं
कहैं कहियाले कलपी हैं परनवाँ ना
देबी देदा देदा देदा दरसनवाँ ना

पूर्वी

हीत भोरहरिया जइबै देवी के दुअरिया
जाइब देवी के दुअरिया
चला चलींजा सँवरिया — चला०

गंगाजी में गोता लगइबै गोड़वा लगबै माँ के
सीतला माई के मन्दिर में दरसन करबै जाके
हो तरसैं, हो तरसैं, दरसन के नजरिया — चला०

पान सुपारी अक्षत रोरी ध्वजा धाम ले जइबै
देवी दुर्गा बड़ी दयामयि ओनहीं के गुन गइबै
चढ़इबै, चढ़इबै नरियर चुनरिया — चला०

जय जगदम्बे अम्बे मइया अन्नपूर्णा काली
वैष्णों देवी सम्मे सीतला मइया मइहर वाली
हो पँउवाँ, हो पँउवा पूजबै आठो पहरिया — चला०

जानी नाहीं जतन 'जीत' के जननी जुगुती बतावा
हमहूँ बहुत सबहुआ मइया मन के आस पुरावा
निभइबै, निभइबै नाता सारी उमिरिया — चला०

माई मोरी सारदा भवानी
सरनियाँ लगाय लेतू हमके

हथवा में तोहरे वीणा सोहाय ही
देखिके सुरतिया हियरा जुड़ाय ही
मथवा झुकाइला चरनियाँ सरनियाँ

तोहरी सरनियाँ में जे भी आईल
विद्या पउलस जीव जुड़ाइल
सारा जग करै सुमिरनियाँ .... सरनियाँ

बिनती करीला हम तोहरी मयरिया
कइदा दया कै हमपे नजरिया
भूलबै ना तोहरी करनियाँ .... सरनियाँ.

माई मोरे मनवाँ में करिहा बसेरवा
जिनिगी के रहिया से छँटत अन्हरवा
माफ करा हमरी नदनियाँ ...... सरनियाँ
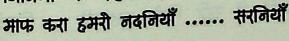
कहरवा

कउनो विधि राखा पत मोर महरानी
विनती करीला करजोर महरानी

केहू कहै दुर्गा केहू कहै काली
सुरत तोहार मइया, जग से निराली
लिलरा से चमके अजोर महरानी — विनती

भक्तन के भीड़ लागै तोहरी दुअरिया
करै जयकार लेइके नरियर चुनरिया
सेवकन कै भइलैं बटोर महरानी — विनती

तोहरे दरस के हई हम भिखारी
आठो पहर राउर रहिया निहारीं
नयना तरस गइलैं मोर महरानी — विनती

अपने चरनियाँ कै दास बनाला
सेवा करब नित हमसे लिखाला
भगति में रहबै विभोर महरानी — विनती

कजरी

धीरे-धीरे पँउवाँ धरत आवा मइया
नयनवाँ दरसन के अकुलाय — धीरे०

बस गइलू परवत पर जाके
हमसे चलल नहीं जाय — धीरे.

बेइला चमेली कै माला रखबै
नरियर चुनरिया जुटाय — धीरे०

पूजन कै हम रीति ना जानी
देबी दिहाही समुझाय — धीरे०

बीच भँवर मोरी नइया मइया
दीहा किनरवाँ लगाय — धीरे०

आवा सारदा भवानी, पँडवाँ पड़ी महरानी
हे मयरिया ही अइतू ना, हे मयरिया ही अइतू ना,
कबसे देखिला डहरिया — हे मयरिया०
सुनिके रूप के बखान, हिय में उठे अरमान
हे मयरिया ही अइतू ना, हे मयरिया ही अइतू ना,
तरसै हमरी नजरिया — हे मयरिया०
लागल असिया हमार, सुनतीं बीणा झनकार
हे मयरिया ही अइतू ना, हे मयरिया ही अइतू ना,
उहे हंस के सवरिया — हे मयरिया०
करतू कंठ पर बसेर, पुजतीं सँझिया सबेर
हे मयरिया ही अइतू ना, हे मयरिया ही अइतू ना,
रहँबै जिनगी भर पुजरीया है — मयरिया०
जग में केहू ना साहरा, आके जीवन मोर सुधारा
हे मयरिया ही अइतू ना, हे मयरिया ही अइतू ना,
गुनवाँ गइबै भर उमिरिया — हे मयरिया०
कहीं आसरा लगाई, लजिया राखा मोरी माई
हे मयरिया ही अइतू ना, हे मयरिया ही अइतू ना,
हथवा जोडेला अनरिंया — हे मयरिया०

देवीगीत

जय सर्वेश्वरी भवानी केतनी महिमा बखानी
मइया आइल बानी रउरि दुअरिआ ना
दरसन देदा देदा देदा मोरी मयरिया ना
देवी दरसन खातिर तरसैं नजरिया ना॥

कलकत्ता में काली विन्ध्याचल विन्ध्य भवानी
वैष्णो देवी ज्वाला माँ मइहर की महरानी
कतहूँ परवत पर डेरा, कहीं गंगा तट बसेरा
मइया शेरवा पर करके सवारिया ना
दरसन देदा देदा देदा मोरी मयरिया ना
देवी दरसन खातिर तरसैं नजरिया ना॥

सब दिन सँझिया विहान जोगी जती धरैलैं ध्यान
लेइके फल, फूल, पान, पँउवा पूजेला जहान
माँगे निर्धन औ धनवान औघड़ जोहै शमशान
मइया मिलि जइहैं हाथै लेइ खपरिया ना
देवी दरसन खातिर तरसैं नजरिया ना॥

लोगवा दूर दूर से आवै सबही देवी के गुन गावै
नरियर चुनरी चढ़ावै, माई कोरव जुड़वावैं
मइया मनसा पुरावैं जीत जै जै कार लगावैं
आकुल नैना जोहैं तोहरी डहरिया ना
देवी दरसन खातिर तरसैं नजरिया ना॥

देवीगीत
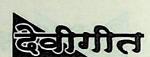
ललकी चुनरिया लेइके अइलीं दुअरिया
तनी केवड़िया खोला ना
जगता हऊ हे मयरिया – तनी०

मथवाँ मुकुट रउरो सुघर सुरतिया
तनी केवड़िया खोला न, तनी केवड़िया खोला न
भौंवे तेगा तलवरिया – तनी०

नरियर चुनरी जुटवलीं, माला मालिन से मँगवली
तनी केवड़िया खोला न, तनी केवड़िया खोला न
भरलि धूप धार से थरिया – तनी०

बलका तोहार, करीं केकरा से गोहार
तनी केवड़िया खोला न, तनी केवड़िया खोला न
तरसे दरसन के नजरिया – तनी०

सरधा के फूल, चाहीं चरन के धूल
तनी केवड़िया खेला न, तनी केवड़िया खेला न
'जीत' जोहेले डहरिया – तनी०

हीत मौरहरिया जइबै देवी के दुअरयिा
मौरे राम देवी के दुअरिया ही ए रामा
संगवाँ में जइहैं मेरा विरनवाँ ही राम – ए रामा०

उँचई पहाड़न पे देवी के धमवा
मौरे राम देवी के धमवा ही ए रामा
दरसन के तरसै मौरा नयनवाँ ही राम–ए रामा०

केहू चढ़ावेला नरियर चुनरिया
मौरे राम नरियर चुनरिया ही ए रामा
केहू चढ़ावै धन रतनवाँ ही राम – ए रामा०

हमहूँ चढ़इबै मइया लाले-लाले फुलवा
मौरे राम लाले – लाले फुलवा ही ए रामा
धिउवा के बारब हम दिअनवा ही राम – ए रामा०

'जीत' के लूरवा मगंबै गावे के सहुरवा
मौरे राम गावे के सहुरवा ही ए रामा
सबही के देवी दरसनवाँ ही राम – ए रामा०

जननी जग की भाग्य विधाता
अम्बे जय जगदम्बे माता
मइया आओ जी आओ जी
जरा जयकार लगाओ जी

वीणा वाली वर दो शारदे मइया मइहर वाली
अन्नपूर्णा इतना दें भण्डार रहे ना खाली
कामाख्या कालिका कटेसरी के गुन गाओ जी
जरा जयकार लगाओ जी—मइया.

विन्ध्यवासिनी, वैष्णों देवी ज्वाला मां का ध्यान धरें
आदि शक्ति, संकठा, शीतला जय काली कल्यान करें
दया मयी मां दुर्गाजी के दर्शन पाओ जी
जरा जयकार लगाओ जी—मइया.

मुम्बा देवी, महालक्ष्मी, सर्वेसरि जीवदानी जी
रणचण्डी, चामुन्डा, चण्डिका, मुण्डेश्वरी भवानी जी
भजो भगवती चरन में श्रद्धा सुमन चढ़ाओ जी
जरा जयकार लगाओं जी—मइया.

महिमा वेद बखानै जानै जननी को जग सारा
जय जगदम्बे अम्बे आओ 'जीत' करें जयकारा
द्वार दया का खुला निरन्तर धन्य मनाओ जी
जरा जयकार लगाओ जी—मइया.

देवीगीत

भगतन के भीर दुअरिया ए देबी
कब लेबू हमनी के खबरिया ए देबी
अँखिया तरस गइलीं बीतली उमरिया ए देबी
कब लेबू हमनी के खबरिया ए देबी
कब लेबू हमनी के खबरिया ए देबी
देखइ के तरसैं नजरिया ए देबी

भगतन के भीतर दुअरिया ए देबी
कब लेबू हमनी के खबरिया ए देबी
अढ़ऊल फुलवा जे पौलीं फुलवरिया ए देबी
संगवाँ में नरियर चुनरिया ए देबी
संगवाँ में नरियर चुनरिया ए देबी
अक्षत कपूर धूप रोरीया ए देबी

भगतन के भीर दुअरिया ए देबी
कब लेबू हमनी के खबरिया ए देबी
चरनन के धूरिया चाही लिखे के लूरिया ए देबी
पार करहु मोरि नवरिया ए देबी
पार करहु मोरि नवरिया ए देबी
'जीत' लगावै जय-जय करिया ए देबी

सुघर सपनवाँ देखलीं पवन ऽऽ झंकोरै
ही कि भौरे–भौरे ना ही कि भौरे–भौरे ना
साती बहिना झूलै झलुअवा – ही कि भौरे०

रतन जड़ल झूला निमिया के डरिया
ही कि भौरे–भौरे ना, ही कि भौरे–भौरे ना
मइया मोरी मिलिके हिलौरैं – ही कि भौरे०

देखते देखत मालिन माला ले अइली
ही कि भौरे–भौरे ना, ही कि भौरे–भौरे ना
फुलवा अउरी दउड़िके तौरे–ही कि भौरे०

झलुआ झूलत देखै सबै बटुराइल
ही कि भौरे–भौरे ना, ही कि भौरे–भौरे ना
लोगवा ठाढ़ दूनो छोरे – ही कि भौरे०

फल फूल नरियर चढ़ावा कै चुनरिया
ही कि भौरे–भौरे ना, ही कि भौरे–भौरे ना
लइका चिरई अगोरैं – ही कि भौरे०

'जीत' जोहैं जग जननी कै रहिया
ही कि भौरे–भौरे ना, ही कि भौरे–भौरे ना
भरि–भरि अँखियन लोरे–ही कि भौरे०

देवीगीत

गाइलाँ गुनवाँ तोहार मोरी मइया हो
नइया लगावा भव से पार मोरी मइया हो

सुघर सुरतिया सुनली स्वेत वसन धारी
हथवा में वीणा सोहै हंस कै सवारी
ज्ञान कै भरैलू भण्डार मोरी मइया हो—नइया०

तुलसी कबीर सूर सुमिरन कइलैं
विद्या से परि पूरन भइलैं
मनवाँ में सरधा अपार मोरी मइया हो—नइया०

अस मन करै रहीं रउरी सरनियाँ
करा उपकार नाहीं भुलवै करनियाँ
आइल बानी तोहरे दुआर मोरी मइया हो—नइया०

बिनती करीला मइया असरा पुरायदा
जिनिगी कै सगरी कलेस ओरवाय दा
सुनिला तू 'जीत' के पुकार मोरी मइया हो—नइया०

अदलपूरा ना दूरा बाटे बलम
देवी दरसन कराइदा ही

मइया के मंदिरवा, गंगाजी के तिरवा
भोर-भोरे गंगा नहवाइदा बलम
देवी दरसन कराइदा ही।।

लाले–लाले फुलवा फुलइलें फुलावरिया
मालीन से माला बनवाइदा बलम
देवी दरसन कराइदा ही।।

सीतला मइया सात बहिनियाँ
चला नरियर चुनरी चढ़वाइदा बलम
देवी दरसन कराइदा ही।।

मोरी, महरानी, हईं बरदानी
चरनन कै धूर दिअवाइदा बलम
देवी दरसन कराइदा ही।।

देवी गीत 'जीत' मन भावै
झूमर सुधर सुनवाइदा बलम
देवी दरसन कराइदा ही।।

देवीगीत

लगन लगै चरनन माई के
मनवाँ धइला धीर
देवी बड़ी दयालु हँरैलीं
भक्त जनन के पीर।।

मीरी मइया की महिमा अपार
चला ही चलीं देवी दुआर

चम–चम चमँके माई कै मंदिरवा
हिया ललचैला लखिके सिंगार
ला ही चलीं देवी दुआर–मीरी०

मथवा मुकुट सौंहै जड़ल रतनवाँ
मन भावै चुनरि चटकार
चला ही चलीं देवी दुआर–मीरी०

गम–गम गमँकैलैं फूल फुलवरिया
जूही, चम्पा, चमेली, कचनार
चला ही चलीं देवी दुआर–मीरी०

लेइ अरजिया मरजिया नेवरती
जीत करैं जय जयकार
चला ही चलीं देवी दुआर–मीरी०

धनि-धनि विन्ध्याचल नगरिया मयरिया
विन्ध्यवासिनी न ही मइया गंगाजी के
पावन किनरवा नियरवे बा धमवा न ही।।

जगमग बैरेली बिजुरिया नजरिया लखि
ललचैलीं हो मइया भगतन से भरल
भवनवाँ कैरेलैं दरसनवाँ न ही।।

मनसा पुरावैलीं मइया बाजेली शहनइया
न ही मइया फल फूल नरियर चुनरिया
चढ़ैलैं रतनवा न ही।।

देवी विन्ध्याचलि महरानी हईं बड़ीदानी
न ही भइया मइया से मांगब मगनवाँ
दीहइँ दरसनवाँ न ही।।

'ज़ीत' के लिखइ के लूर सहूर सोहर
गावन ही मइया चाहींला अँचरवा के
छँहिया पूजन के चरनवा न ही।।

देवीगीत

दरसन देदा विन्ध्याचल भवानी
आइल बानीजा धमवाँ ना।।

जियरा जुड़ाय गइलैं देखिके मंदिरवा
मनवाँ कहेला रहीं रउरे नियरवा
चमके चउकठवा चम–चम निरखैं नयनवाँ न–दरसन०

सबही से सुनीला सुधर सुरतिया
केतना बखान करीं रउरी किरितिया
कहीं करजोर पूजब सबदिन चरनवाँ न–दरसन०

भक्तन के भीड़ भइल आजुकी रतिया
फल, फूल, माला लिहलैं हाथे अगरबत्तिया
करेलैं बिनतिया कबले कलपी परनवाँ न–दरसन०

पूजैं चरनियाँ पूछैं पूजवा कै रीत ही
जतन बताइदा जयकार करैंजीत ही
बिनती करीला कबले पुरिहैं सपनवाँ न–दरसन०

छपरहिया

देवी दरसनवाँ के तरसै नयनवाँ
ए वीरनवा हमरे
तनी देता दरसन कराय—ए वीरनवा०
माई विन्ध्यवासिनी कै विन्ध्याचल बा धमवाँ
लागै दरबार जहवाँ बरहो महिनवाँ
भगतन कै भीड़ होला सँझिया बिहनवाँ
ए वीरनवा हमरे
मइया के गुनवाँ गवाय—ए वीरनवा०
उँहै हई दुर्गा उँहै हई काली
साती बहिनिया कै सूरत निराली
जाइके पूजब हमहूँ सबकर चरनवाँ
ए वीरनवा हमरे
हाथ जोरि फुलवा चढ़ाय—ए वीरनवा०
अक्षत रोरी लेके नरियर चुनरिया
हमहूँ जुटाके जइबे देवी के दुअरिया
भरि लेबे थरिया में घिउवा के दियनवा
ए वीरनवा हमरे
पूजा करबै धमवाँ में जाय—ए वीरनवा०
दानी बरदानी बाटी हमरी मयरिया
देइहैं असीस भरल रही फुलवरिया
'जीत' देवीगीत गइहें सबके सम्हनवाँ
ए वीरनवा हमरे
मइया दीहइँ मनसा पुराय—ए वीरनवा०

कजरी

मइया तोरी महिमा अपरम्पार
पार मोरी कइदा नवरिया ना

सबसे सुनीला दिन रतिया
मोरी मइया के सुधर सुरतिया रामा
अरे रामा चम–चम चमकेलिलार
पार मोरी कइदा नवरिया ना ...

मइया वीणा मधुर बजावा
आके असिया मोरी पुरावा रामा
अरे रामा हंस पै होके सवार
पार मोरी कइदा नवरिया ना ...

साती सुर में बिराजेलू मइया
दीन दुखियन के तूही सहइया रामा
अरे रामा नइया पड़ी मझधार
पार मोरी कइदा नवरिया ना ...

देवी बाटू बड़ी बरदानी
राखा सबकर सभा बीच, पानी रामा
अरे रामा होवै 'जीत' ना हार
पार मोरी कइदा नवरिया ना ...

देवीगीत

जाइब देवी के दुअरयिा, दुनिया के दुःख सुख छोड़िके

अम्बे जै जगदम्बे सम्भै, शीतला मइया मोरी
पानी सुपारी ध्वजा नरियर पावन अक्षत रोरी
कोरि, लाली रे चुनरिया, फूल लईबै लाल–लाल लोड़िके
जाइब देवी के दुअरिया दुनिया के दुःख सुख छोड़िके

विन्ध्यवासिनी विन्ध्याचल में कलकत्ता में काली
मातु शारदा मइहर जिनकी महिमा बड़ी निराली
जाली लेबे खबरिया काटैं कलेस मइया दौड़िके
जाइब देवी के दुअरिया, दुनिया के दुःख सुख छोड़िके

पूजा पाठ विधान ध्यान कै कउनो मरम न जानी
भगति भाव से निशदिन मइया गुनवाँ गावत बानी
अइलीं तोहरी दुअरिया असरा सनेहिया जोड़िके
जाइब देवी के दुअरिया, दुनिया के दुःख सुख छोड़िके

आस चरन के दास बनाला सेवा करब मयरिया
'जीत' के मइया जतन बतावा भरल रहे फुलवरिया
हम हूँ बानी अनरिया बिनती करीला कर जोरिके
जाइब देवी के दुअरिया, दुनिया के दुःख सुख छोड़िके।

शुभकामनाएँ

पूर्वांचल की माटी आज पूज्यनीय श्री जीतेन्द्र नाथ सिंह 'जीत' के नाम से भली-भाँति परिचित है । उनका लिखा 'गीत-गुंजन' एवं 'बजे मेरी वीणा के तार' अत्यन्त लोकप्रिय हुआ । इनके गीत अपने में सहजता, स्वाभाविकता, मिठास एवं धुनों की विविधता लिए हुए होते हैं ।

आज लोक विधा से जुड़ा हुआ हर कलाकार इनके गीतों को गाता है । मैं भी अपने प्रत्येक कार्यक्रम में इनके कर्णप्रिय गीतों की प्रस्तुति कर श्रोताओं के मध्य लोकप्रियता एवं प्रशंसा प्राप्त करती हूँ ।

उनकी दो कृतियाँ 'जाइब देवी के दुअरिया' एवं 'चटक-चाँदनी' एक साथ प्रकाशित हो रही हैं एवं इन दोनों कृतियों में आपको विषय एवं धुनों की विविधता एवं भोजपुरी की मिठास मिलेगी ।

मेरी ढेर सारी शुभकामनायें उनके साथ हैं ।

पता :
डी. 48/72, मिसिर पोखरा
वाराणसी
फोन : 351785

महुआ बनर्जी
पार्श्व गायिका (फिल्म)
टी. सीरीज, एच.एम.वी.
कलाकार
आकाशवाणी एवं दूरदर्शन
(भजन, गीत, गजल एवं लोकगीत)

गीतकार :

जीतेन्द्र नाथ सिंह

'जीत'